IJAER/ May- June -2022/Volume-11/Issue-3 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

प्रमुख ब्राह्मण ग्रन्थों के आख्यान

Dr. Nand Kishor

Lecturer Janta inter college sirsiya no. 2

Post vijayikaf District Kushinagar

सार

वेदों का वह भाग, जिसमें वैदिकयज्ञों के लिये वेद.मन्त्रों के विधानादि की विस्तृत व्याख्या की गयी है, 'ब्राह्मण' ग्रन्थ कहलाते हैं। 'ब्रह्म' अर्थात् यज्ञविषयक प्रतिपादक होने से इनको 'ब्राह्मण' कहा गया है। ब्राह्मण ग्रन्थों का प्रणयन ब्रह्मावर्त प्रदेश में लगभग 3000 ई.पू. से 2000 ई. पू. के मध्य हुआ। ब्राह्मणों का प्रधान प्रतिपाद्य विषय यज्ञों की सर्वाङ्गपूर्ण मीमांसा करना है। इसकी प्रतिष्ठा के वहाँ दो आधार हैं– विधि तथा अर्थवाद। विधियाँ दश हैं– हेतु, निर्वचन, निन्दा, प्रशंसा, संशय, विधि, परक्रिया, पुराकल्प, व्यवधारण.कल्पना, उपमान। इन दश विधियों में भी प्रधानता विधियों की ही है, शेष जो अन्य प्रकार हैं, वे विधियां के ही पोषक हैं। उन्हें मीमांसकों ने 'अर्थवाद' कहा है। विषय विवेचन की दृष्टि से ब्राह्मणों के प्रधानतः सात विषय हैं– विधि, विनियोग, हेतु, अर्थवाद, निर्वचन, आख्यान तथा उपनिषद् भाग।

मुख्य शब्द : *ब्राह्मण , ग्रन्थ*

परिचय

वैदिक वाङ्मय के चार स्तम्भों संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद् में से संहिता तथा ब्राह्मण दोनों की ही संयुक्त संज्ञा 'वेद' है– **'मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्।** */ साथ ही उपासना की कर्मकाण्डीय तथा ज्ञानकाण्डीय पद्धतियों की दृष्टि से भी दोनों का सम्बन्ध समानरूप से 'कर्मकाण्ड' से है। आपस्तम्ब का कथन है कि मन्त्र और ब्राह्मण दोनों को 'वेद' इसलिये कहा जाता है क्योंकि 'मन्त्रसंहितायें' तथा 'ब्राह्मण' दोनों ही यज्ञ के प्रमाणस्वरूप हैं–* **'मन्त्रब्राह्मणयोः यज्ञस्य प्रमाणम्।'** *अतः मन्त्रब्राह्मणात्मक वेद कहने का तात्पर्य यही है कि वेदमन्त्रों (संहिताओ) की स्थिति बिना ब्राह्मण ग्रन्थों के पूर्णता का प्राप्त नहीं कर सकती। वैदिक संहिताओं से अतिरिक्त अंश ही ब्राह्मण है–* **'शेषे ब्राह्मण शब्दः।'** *जो कि वैदिक मन्त्रों की याज्ञिक दृष्टि से विनियोगात्मक व्याख्या प्रस्तुत करते है। अतः वैदिक संहिताओं के अनन्तर उनसे सम्बद्ध ब्राह्मण ग्रन्थों का परिचय प्राप्त करना भी आवश्यक हो जाता है।*

वैदिक संहिताओं के शेष (अतिरिक्त) अंश ही ब्राह्मण हैं। जैसा कि जैमिनी का वचन है– **'शेषे ब्राह्मण शब्दः।** वैदिक वाङ्मय के अन्तर्गत यद्यपि ब्राह्मण ग्रन्थों को भी वेद कहा गया है, तथापि ये (ब्राह्मण ग्रन्थ) वस्तुतः वैदिक मन्त्रों के व्याख्यानरूप हैं जैसा कि सायण ने अपने भाष्य में स्पष्ट किया है–

"यद्यपि मन्त्रब्राह्मणात्मको वेदः, तथापि ब्राह्मणस्य मन्त्रव्याख्यानस्वरूपत्वाद् मन्त्रा एवादौ समाम्नाताः।" (तैत्ति. सं, सा०भा०)

ऋग्वेदभाष्यभूमिका में भी कहा गया है– **"अवशिष्टो वेदभागो ब्राह्मणम्"**

'ब्राह्मण' शब्द सामान्यतः जातिविशेष तथा ग्रन्थविशेष दोनों अर्थों का वाचक है तथा इसका प्रयोग पुंल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग दोनों में प्राप्त होता है किन्तु वैदिक वाङ्मय के परिप्रेक्ष्य में 'ब्राह्मण' शब्द 'ग्रन्थविशेष' अर्थ का प्रतिपादक है तथा केवल नपुंसकलिङ्ग में ही प्रयुक्त हुआ है–

'ब्राह्मणं ब्रह्मसंघाते वेदभागे नपुंसकम्।'

वैदिक वाङ्मय में 'ग्रन्थ' के अर्थ में 'ब्राह्मण' शब्द का प्राचीनतम प्रयोग तैत्तिरीय संहिता में उपलब्ध होता

है– "एतद् ब्राह्मणन्येव पञ्चहवींषि।"माधवाचार्य तथा सायणाचार्य ने भी 'ब्राह्मण' शब्द का नपुंसकलिङ्ग तथा 'ग्रन्थविशेष' के अर्थ में ही प्रयोग किया है–

"मन्त्रश्च ब्राह्मणश्चेति द्वौ भागौ, तेन मन्त्रतः अन्यद् ब्राह्मणमित्येदत् भवेद् ब्राह्मणलक्षणम्।"(जैमिनीयन्यायमालाविस्तर 2.1.8)

ब्राह्मण शब्द 'ब्रह्म' शब्द में 'अण्' प्रत्यय लगाने पर निष्पन्न होता है। 'ब्रह्म' शब्द दो अर्थों का वाचक है– मन्त्र तथा यज्ञ। इस दृष्टि से 'ब्राह्मण' शब्द का तात्पर्य उन ग्रन्थों से है, जिनमें याज्ञिक दृष्टि से मन्त्रों की विनियोग निर्देशपूर्वक व्याख्या की गयी है। तैत्तिरीय संहिता में अपने भाष्य में भट्टभास्कर ने कहा है–

"ब्राह्मणंनामकर्मणस्तन्मन्त्राणां च व्याख्यानग्रन्थः"

ऐसी भी मान्यता है कि यज्ञ.यागादि विधान करने वाले एकमात्र ब्राह्मण पुरोहितों के निजी ग्रन्थ होने के कारण इन ग्रन्थों को 'ब्राह्मण' कहा गया। वाचस्पतिमिश्र ने एक श्लोक से ब्राह्मण ग्रन्थ के स्वरूप को पूर्णतः स्पष्ट किया है–

"नैरुक्त्यं यस्य मन्त्रस्य विनियोगः प्रयोजनम्।
प्रतिष्ठानं विधिश्चैव ब्राह्मणं तदिहोच्यते।।"

उद्देश्य

1ण वैदिक संस्कृत पर अध्ययन
2ण ब्राह्मण ग्रन्थ पर अध्ययन

वैदिक साहित्य

भारत के पश्चिमोत्तर भाग में स्थित सप्तसिन्धु प्रदेश के निवासियों की साहित्यिक अभिव्यक्ति मौखिक रूप से जिस भाषा में हुई उसे वैदिक संस्कृत कहते हैं। इस भाषा में बहमूल्य साहित्यिक परम्परा चली जो धार्मिक एवं लौकिक विषयों से भी भरी थी। वैदिक साहित्य तात्कालिक समाज की प्रवृत्तियों को समझने में बहुत उपादेय है। वैदिक साहित्य के धार्मिक विषयों में यज्ञ, देवता, उनके स्वभाव, भेद आदि आए हैं, तो लौकिक विषयों में मानव की इच्छाएँ, संकट और उनके निवारण, समाज का स्वरूप, चिकित्सा, दान, विवाह आदि हैं। इनसे समाज के विविध पक्षों का बोध होता है। वैदिक साहित्य के विकास का समय 6000 ई.पू. से 800 ई.पू. तक माना जाता है। इस कालावधि में चार चरणों में साहित्य का विकास देखा जाता है।
———

1. संहिता – संहिताओं में वैदिक मन्त्रों का संग्रह है। इनके चार मुख्य रूप हैंरू ऋग्वेदसंहिता, यजुर्वेदसंहिता, सामवेदसंहिता तथा अथर्ववेदसंहिता। इनका विभाजन वैदिक यज्ञों में काम करने वाले चार ऋत्विजों (यज्ञ कराने वालों) के कार्यों को ध्यान में रखकर हुआ था। यज्ञों में ये चार ऋत्विज होते थेकृ होता, अध्वर्यु, उद्गाता तथा ब्रह्मा। होता देवताओं को यज्ञ में बुलाता है और ऋचाओं का पाठ करते हुए यज्ञ–देवों की स्तुति करता है। होता के प्रयोग के लिए उपयोगी मन्त्रों का संग्रह ऋग्वेदसंहिता में है। अध्वर्यु का काम यज्ञ का विधिपूर्वक सम्पादन है। इसके लिए आवश्यक मन्त्र यजुर्वेदसंहिता में संकलित हैं। उद्गाता का काम यज्ञ में ऋचाओं का सस्वर गान करना है। वह मधुर स्वर में देवताओं को प्रसन्न करता है। उसके

उपयोग के लिए ऋग्वेदसंहिता के मंत्र सामवेदसंहिता में संकलित किए गए हैं। ब्रह्मा नामक ऋत्विज् यज्ञ का पूरा निरीक्षण करता है, जिससे कोई त्रुटि न हो। यद्यपि वह सभी वेदों का ज्ञाता होता है, किन्तु उसका अपना विशिष्ट वेद अथर्ववेद–संहिता है। इन संहिताओं का अध्ययन विभिन्न परिवारों में पृथक–पृथक् रूप से होता था, परिणामस्वरूप कालान्तर में इनकी अनेक शाखाएँ हो गई। आज वैदिक संहिताओं की कुछ ही शाखाएँ उपलब्ध हैं।

2. ब्राह्मण कृ ब्राह्मण–ग्रन्थों का मुख्य उद्देश्य संहिताओं के मंत्रों द्वारा यज्ञों की व्याख्या करना था। इस प्रसंग में बहुत–सी नैतिक, सामाजिक तथा राजनीतिक बातें भी आई हैं। वैदिक धर्म का सांगोपांग विवेचन इन ग्रन्थों में किया गया है। वैदिक संहिताओं की प्रत्येक शाखा की व्याख्या करने वाले ब्राह्मण–ग्रन्थ पृथक–पृथक् हैं।

3. आरण्यक – ब्राह्मण–ग्रन्थों से सम्बद्ध आरण्यकों की रचना वनों में हुई। वैदिक कर्मकाण्ड, अनुष्ठान की उत्पत्ति और उसके महत्त्व के विषय में ऋषियों का जो चिन्तन हआ, उसे आरण्यकों में रखा गया। ब्राह्मण–ग्रन्थों के समान ये भी सरल गद्य में ही लिखे गए। विभिन्न वैदिक संहिताओं की शाखाओं के आरण्यक भी पृथक–पृथक थे। कर्मकाण्डी जनसमुदाय को ज्ञानकाण्ड की ओर लगाने का प्रयास इन आरण्यकों में हुआ है। इनका सम्बन्ध वानप्रस्थ आश्रम से था।

4. उपनिषद् – वैदिक साहित्य के विकास के अन्तिम चरण में उपनिषद–ग्रन्थ आते हैं। इनमें दर्शन–शास्त्र की विवेचना हुई, यद्यपि यह शास्त्र यत्र–तत्र पहले भी संहिताओं और आरण्यकों में आ चुका था। उपनिषदों में गुरु–शिष्य के संवादों के रूप में बहुत गूढ बातें कही गई हैं। आत्मा, ब्रह्म तथा संसार के रहस्यों को इन विवेचनाओं में प्रकाशित किया गया है। वैदिक साहित्य के अन्तिम भाग में होने तथा वैदिक दर्शन के विकसित रूप को प्रकाशित करने के कारण इन्हें वेदान्त भी कहा जाता है।

मूल वैदिक साहित्य को समझाने और उनका उपयोग बताने के लिए वेदाङ्ग ग्रन्थ बने। इनके छरू भेद हैंकृ शिक्षा (उच्चारण की विधि), कल्प (कर्मकाण्ड तथा आचार), छन्द (अक्षरों की गणना के आधार पर पद्यात्मक मन्त्रों के स्वरूप का निर्धारण तथा नामकरण), निरुक्त (वैदिक शब्दों का निर्वचन या व्याख्या), व्याकरण (शब्दों की व्युत्पत्ति) तथा ज्योतिष (यज्ञ के समय का निरूपण)। इन्हें उपयोगिता की दृष्टि से वैदिक साहित्य में ही रखा जाता है, यद्यपि इन विषयों से सम्बद्ध ग्रन्थ लौकिक संस्कृत भाषा में लिखे गए। वेदांग प्रायरू सूत्रात्मक हैं और वैदिक कर्मकाण्ड की विपुलता को संक्षिप्त वाक्यों में प्रकाशित करते हैं। मुख्य रूप से कर्मकाण्ड से सम्बद्ध कल्प–ग्रन्थों को सूत्र–साहित्य में रखा जाता है। इनके मुख्य चार भेद हैंकृ श्रौतसूत्र (वैदिक यज्ञों की प्रक्रिया बतलाने वाले), गृह्य–सूत्र (व्यक्तिगत एवं पारिवारिक जीवन से सम्बद्ध कर्मकाण्ड का वर्णन करने वाले), धर्मसूत्र (धार्मिक एवं सामाजिक नियमों, कर्तव्यों और अधिकारों का वर्णन करने वाले) तथा शुल्व–सूत्र (यज्ञवेदिका को नापने और उसके निर्माण का वर्णन करने वाले)।

ब्राह्मण ग्रन्थ

भारतीय परंपरा मन्त्र और ब्राह्मण दोनों को वेद कहती है (मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्), किन्तु, आधुनिक विचारक वेद से केवल संहिता–भाग का ही ग्रहण करते हैं। ब्राह्मण शब्द ब्रह्मन् से बना है, जिसका अर्थ हैकृ वेद (ब्रह्म) से सम्बद्ध। अतः वेदों की शाखाओं की व्याख्या करने के लिए पृथक–पृथक् ब्राह्मण ग्रन्थ लिखे गए। यद्यपि इनका स्वरूप मूलतरू धार्मिक है, पर राजनीतिक, सामाजिक तथा दार्शनिक विषयों का भी इनमें समावेश है। ये सभी विषय मन्त्रों की व्याख्या से ही जोड़े गए हैं। वैदिक कर्मकाण्ड का विकास इन्हीं ग्रन्थों से जाना जा सकता है। इनके अतिरिक्त सृष्टि से सम्बद्ध पौराणिक कथाएँ भी ब्राह्मणों में आई हैं।

वस्तुत: वैदिक संहिताओं के प्रतीकात्मक अर्थों को ब्राह्मणों में विस्तार दिया गया है। इनमें मत्स्य द्वारा सृष्टि की रक्षा, शुनरूशेप की बलि दिए जाने से रक्षा इत्यादि कथाएँ हैं। यहाँ प्रत्येक याज्ञिक विधान से कोई न कोई आख्यान जोड़ दिया गया है।

ऋग्वेद–संहिता से सम्बद्ध दो ब्राह्मण–ग्रन्थ हैं— ऐतरेय और कौषीतकि। पहले में 40 और दूसरे में 30 अध्याय हैं। दोनों में विषयवस्तु की बहुत समानता है। इनमें सोमयाग, अग्निहोत्र, राजस्य, राज्याभिषेक इत्यादि का विवरण दिया गया है। ऐतरेय ब्राह्मण ऐतरेय महीदास की रचना है, जबकि कहोड़ कौषीतकि ने कौषीतकि ब्राह्मण की रचना की। इन दोनों में सरल गद्य का प्रयोग है।

शुक्लयजुर्वेद की माध्यन्दिन और काण्व दोनों शाखाओं के ब्राह्मण ग्रन्थों का नाम शतपथ है, किन्तु दोनों शाखाओं के शतपथ ब्राह्मण पृथक–पृथक् हैं। इनमें अध्यायों की योजना में अन्तर है। माध्यन्दिन शतपथ में 14 काण्ड तथा 100 अध्याय हैं, जबकि काण्व शाखा के शतपथ में 104 अध्याय तथा 17 काण्ड हैं। शतपथ ब्राह्मण ऋग्वेद के बाद वैदिक साहित्य में सबसे बड़ा ग्रन्थ है। इसमें दर्शपूर्णमास, पितृयज्ञ (श्राद्ध), उपनयन, स्वाध्याय, अश्वमेध, सर्वमेध इत्यादि का वर्णन है। पूरे ब्राह्मण–ग्रन्थ में याज्ञवल्क्य को प्रामाणिक माना गया है, क्योंकि इसी ऋषि ने सूर्य की उपासना करके शुक्लयजुर्वेद की प्राप्ति की थी। अग्नि–चयन वाले अध्याय में शाण्डिल्य ऋषि को प्रामाणिक माना गया है। बृहदारण्यक उपनिषद् इसी ब्राह्मण का अन्तिम भाग है। ––कृष्णयजुर्वेद से सम्बद्ध तैत्तिरीय ब्राह्मण है, जो वास्तव में तैत्तिरीय संहिता का ही परिशिष्ट है। संहिता में कुछ अनुक्त विषय रह गए थे जिनकी पूर्ति इस ब्राह्मण में हुई है। इस वेद की अन्य संहिताओं (काठक, मैत्रायणी आदि) में तो ब्राह्मण ग्रन्थ अंग रूप से ही मिले हुए हैं। तैत्तिरीय ब्राह्मण में तीन अष्टक या काण्ड हैं, जिनमें अग्न्याधान, गवामयन, सौत्रामणि इत्यादि यज्ञों का वर्णन है।

सामवेद से सम्बद्ध कई ब्राह्मण हैं, जैसेकृ ताण्ड्य (पञ्चविंश), षड्विंश, जैमिनीय इत्यादि। ताण्ड्य ब्राह्मण में प्राचीन दन्तकथाओं के साथ व्रात्यों (आर्य जाति से बहिष्कृत वर्ग) के पुनरू वर्णप्रवेश का वर्णन है। षड्विंश ब्राह्मण में चमत्कार और शकुन से सम्बद्ध अद्भुत ब्राह्मण नामक एक अध्याय है। जैमिनीय ब्राह्मण में तीन भाग हैं तथा यह शतपथ के समान महत्त्वपूर्ण है। इसमें विज्ञान की भी सामग्री मिलती है। इनके अतिरिक्त सामवेद से सम्बद्ध दैवत, आर्षेय, सामविधान, वंश, छान्दोग्य, संहितोपनिषद इत्यादि कई ब्राह्मण ग्रन्थ हैं। अथर्ववेद से सम्बद्ध एक गोपथ ब्राह्मण मिलता है, जिसमें दो भाग हैंकृ पूर्व गोपथ और उत्तर गोपथ। इसमंए सृष्टि, ब्रह्मा, ब्रह्मचर्य, गायत्री आदि की महिमा का वर्णन है। इसमें ओंकार के साथ त्रिमूर्ति (ब्रह्मा, विष्णु और शिव) का भी उल्लेख है। ––ब्राह्मण ग्रन्थों में सांस्कृतिक तत्त्वों का बीज भी प्राप्त होता है, जैसेकृ सृष्टि की व्याख्या, वर्णाश्रम–धर्म, स्त्री–महिमा, अतिथि–सत्कार, यज्ञ का महत्त्व, सदाचार, विद्यावंश इत्यादि।

आरण्यक

आरण्यकों की रचना वनों में हई। वनों में रहकर चिन्तन करने वाले ऋषियों ने वैदिक कर्मकाण्डवाद से पृथक् रहकर उनमें प्रतीक खोजने की चेष्टा की। ब्राह्मणों के परिशिष्ट के रूप में विकसित आरण्यकों में यज्ञ के अंतर्गत अध्यात्मवाद का पल्लवन किया गया। कर्म की यही व्याख्या आगे चलकर मीमांसा–दर्शन, धर्मशास्त्र तथा कर्मवाद में विकसित हुई। वानप्रस्थों के यज्ञों का विधान करने के साथ–साथ उपनिषदों के ज्ञान–काण्ड की भूमिका भी आरण्यकों में तैयार की गई। प्राणविद्या का विवेचन आरण्यकों का वैशिष्ट्य है। इस समय सात आरण्यक ग्रन्थ उपलब्ध हैं। ऋग्वेद के आरण्यककृ ऐतरेय और कौषीतकि, ये दोनों इन्हीं नामों वाले ब्राह्मण–ग्रन्थों के अंग हैं। यजुर्वेद के बृहदारण्यक, तैत्तिरीयारण्यक तथा मैत्रायणीयारण्यक नामक तीन आरण्यक हैं। सामवेद के जैमिनीय और छान्दोग्य आरण्यक मिलते हैं। इन सभी में अपनी शाखाओं से सम्बद्ध कर्मों का विचार किया गया है, साथ ही संन्यास–धर्म का भी महत्त्व बतलाया गया है। बृहदारण्यक में कहा गया है कि इसे जानकर मनुष्य मुनि बन जाता है। आत्मा को जानकर वह ब्रह्मलोक की कामना करते हुए परिव्राजक बनकर पुत्र, वित्त और लोक की एषणा (इच्छा) का त्याग करता है तथा भिक्षाचर्या करता है।

उपनिषद

वैदिक साहित्य में प्रचार की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्व उपनिषदों का है। इनकी महत्ता दार्शनिक विचारों के कारण है, जिनसे ये देश–विदेश में लोकप्रिय हैं। दाराशिकोह ने इनका अनुवाद फारसी में किया था। पुनरू यूरोपीय भाषाओं में भी इनका अनुवाद हुआ। फ्रांसीसी दार्शनिक शॉपेनहावर ने कहा था दृ "उपनिषद् मेरे जीवन तथा मृत्यु दोनों के लिए सान्त्वनादायक हैं।"

प्राचीन उपनिषदों की संख्या 13 थी, किन्तु कालान्तर में इनकी संख्या शताधिक हो गई। परवर्ती उपनिषदों में विभिन्न मतावलम्बियों ने अपने धर्मों का सार प्रकट किया, किन्तु इनका सम्बन्ध वैदिक साहित्य से स्थापित नहीं हो सकता। वैदिक शाखाओं में मौलिक रूप से दार्शनिक चिन्तन के लिए विकसित उपनिषदों की गणना इस प्रकार की जाती है ऋग्वेद से सम्बद्ध

- ऐतरेय तथा कौषीतकि। कृष्णयजुर्वेद से सम्बद्ध
- कठ, श्वेताश्वतर, मैत्रायणी (मैत्री) तथा
- तैत्तिरीय। शुक्लयजुर्वेद से सम्बद्ध
- ईश तथा बृहदारण्यक सामवेद से सम्बद्ध
- छान्दोग्य तथा केन। अथर्ववेद से सम्बद्ध

प्रश्न, मुण्डक तथा माण्डूक्य। उपनिषदों में प्रायरू संवादों के द्वारा तत्त्वज्ञान समझाया गया है। उनमें पुरुष के शरीर में प्राणादि की प्रतिष्ठा, आत्मा से सृष्टि की उत्पत्ति, विद्या और अविद्या का अन्तर, जगत् और आत्मा के स्वरूप, ब्रह्मतत्त्व इत्यादि विषय बहुत रोचक शैली में समझाए गए हैं। कहीं प्रश्नोत्तर के द्वारा, तो कहीं दृष्टान्तों के द्वारा इन विषयों का निरूपण हआ है। उपनिषदों में गद्य और पद्य दोनों का प्रयोग है। बृहदारण्यक तथा छान्दोग्य बड़े उपनिषद हैं शेष लघु हैं। माण्डूक्योपनिषद् में तो केवल 12 वाक्य हैं। ईशोपनिषद् में 18 मन्त्र हैं, जो यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के रूप में हैं। कठोपनिषद में यम–नचिकेता के संवाद में आत्मा का स्वरूप बतलाया गया है। बृहदारण्यक में जनक–याज्ञवल्क्य के शास्त्रार्थ से ब्रह्म का निरूपण है। इस उपनिषद् में याज्ञवल्क्य की विदुषी पत्नी मैत्रेयी तथा उनसे शास्त्रार्थ करने वाली गार्गी की कथा आई है, जिससे उस युग की विदुषी स्त्रियों का पता लगता है।

उपनिषदों के आधार पर वेदान्त–दर्शन का विकास हुआ, जिसके फलस्वरूप ब्रह्मसूत्र की रचना बादरायण ने की। महाभारत के भीष्मपर्व में अवस्थित गीता भी उपनिषदों के दर्शन को ही पौराणिक शैली में प्रस्तुत करती है। उपनिषदों में परम सुख की प्राप्ति का मार्ग समझाया गया है। ब्रह्म के लक्षण हैंकृ सत, चित् और आनन्द। इन तीनों की व्याख्या उपनिषदों में सम्यक् रूप से की गई है। शंकराचार्य ने मुख्य 10 उपनिषदों पर भाष्य लिखकर अद्वैतवाद का प्रवर्तन किया। इसी प्रकार वेदान्त के विभिन्न सम्प्रदायों में उपनिषदों की अपने–अपने ढंग से व्याख्या की गई। उपनिषदों में दर्शन–शास्त्र के अमूल्य रत्न भरे पड़े हैं।

वेदाङ्ग

कालक्रम से वैदिक संस्कृत के स्थान पर लौकिक संस्कृत का प्रचलन होने पर, वैदिक मन्त्रों का उच्चारण करना तथा अर्थ समझना कठिन हो गया। यास्क ने कहा है कि वैदिक अर्थों को समझने में कठिनाई का अनुभव करने वाले लोगों ने निरुक्त

तथा अन्य वेदाङ्गों की रचना की। वेदों के छरू अंग माने गएकृशिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष तथा छन्द। इन्हें समझने वाला व्यक्ति ही वेदों का सही उच्चारण, अर्थबोध एवं यज्ञ कार्य कर सकता था। इन सभी शास्त्रों के ग्रन्थ लौकिक संस्कृत में लिखे गए. क्योंकि इनके विकास का कारण ही था वैदिक संस्कृत का प्रयोग समाप्त हो जाना। इनका काल 800 ई. पू. से प्रारम्भ होता है।

शिक्षा – यह उच्चारण का विज्ञान है, जो स्वर–व्यञ्जन के उच्चारण का विधान करता है। इसका विस्तार प्रातिशाख्य ग्रन्थों में मिलता है। वेदों की पृथक्–पृथक् शाखाओं का उच्चारण बतलाने के कारण इन्हें प्रातिशाख्य कहा जाता है। ऋक्प्रातिशाख्य शौनक–रचित ग्रन्थ है, जो ऋग्वेद के अक्षरों, वर्णों एवं स्वरों की संधियों का विवेचन करता है। इसी प्रकार अन्य वेदों के भी प्रातिशाख्य हैं, जो उन वेदों के उच्चारणों का वैशिष्ट्य बतलाते हैं। ये सभी सूत्र रूप में हैं।

कल्प – यह मुख्यतरू वैदिक कर्मकाण्ड का प्रतिपादन करने वाला वेदाङ्ग है। कल्प का अर्थ है विधान। यज्ञ–सम्बन्धी विधान कल्प सूत्रों में दिए गए हैं। कल्प के चार भेद हैं, जिन्हें श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र तथा शुल्वसूत्र कहते हैं। ये चारों विभिन्न वेदों के लिए पृथक्–पृथक् हैं। श्रौतसूत्रों में श्रौतयज्ञों का विधान है, जैसेकृ दर्शपूर्णमास, अग्निहोत्र, चातुर्मास्य, वाजपेय, अतिरात्र, पितृमेध इत्यादि। इस समय आश्वलायन, शांखायन (ऋग्वेद), कात्यायन (शुक्लयजुर्वेद), जैमिनीय (सामवेद) वैतान (अथर्ववेद) इत्यादि श्रौतसूत्र उपलब्ध हैं। गृह्यसूत्र गृह्याग्नि में होने वाले संस्कारों तथा गृह्ययागों का वर्णन करते हैं, जैसे दृ उपनयन, विवाह आदि। सभी वेदों से सम्बद्ध लगभग 20 गृह्यसूत्र प्राप्त हैं। धर्मसूत्रों में मानव–धर्म, समाज–धर्म, राजधर्म तथा पुरुषार्थों का वर्णन है। इस समय छरू धर्मसूत्र मिलते हैंकृ गौतम, आपस्तम्ब, वसिष्ठ, बौधायन, हिरण्यकेशी और विष्णुधर्मसत्र। ये धर्मसूत्र ही परवर्ती स्मृतियों के आधार हैं। शुल्व का अर्थ है मापने का सूत (धागा)। इन सूत्रों में यज्ञवेदिका के निर्माण आदि का वर्णन रेखागणित (ज्यामिति) की सहायता से किया गया है।

व्याकरणकृ इसे वेदों का मुख कहा गया है। इस शास्त्र में प्रकृति और प्रत्यय के रूप में विभाजन करके पदों की व्युत्पत्ति बतलाई जाती है। व्याकरण की बहुत लम्बी परम्परा इन्द्र आदि वैयाकरणों से चली, किन्तु उस परम्परा के अवशेष यत्र–तत्र उद्धरणों में ही पाए जाते हैं। प्रथम उपलब्ध व्याकरण ग्रन्थ के प्रणेता पाणिनि ही हैं, जिन्होंने अष्टाध्यायी के रूप में वैदिक और लौकिक संस्कृत दोनों भाषाओं का व्याकरण लिखा है। व्याकरण से वेदों की रक्षा होती है तथा वही पदशुद्धि का विचार करता है। सम्प्रति पाणिनि की अष्टाध्यायी ही व्याकरण का प्रतिनिधि–ग्रन्थ है, जिस पर टीकाओं की समृद्ध परम्परा मिलती है।

निरुक्त – इसका अर्थ है निर्वचन। वैदिक शब्दों का अर्थ व्यवस्थित रूप से समझाना ही निरुक्त का प्रयोजन है। इस समय यास्क–रचित निरुक्त ही एक मात्र उपलब्ध निरुक्त है। वैदिक शब्दों का संग्रह निघण्टु (पाँच अध्याय) के रूप में प्राप्त होता है। उसी की व्याख्या यास्क ने निरुक्त के 14 अध्यायों में की है। यास्क का काल 800 ई. पू. माना जाता है। निरुक्त वेदार्थज्ञान की कुंजी है।

ज्योतिष – यह काल का निर्धारण करने वाला वेदाङ्ग है। वैदिक–यज्ञ काल की अपेक्षा रखते हैं और वे किसी निश्चित काल में ही सम्पादित होते हैं, तभी उनका फल मिलता है। इसका निश्चय ज्योतिष करता है। काल का विभाजन, मुहूर्त का निश्चय, ग्रहों–नक्षत्रों की गति का निर्धारण इत्यादि ज्योतिष के ही विषय हैं। लगधाचार्य ने इन कार्यों के लिए वेदाङ्ग ज्योतिष नामक ग्रन्थ लिखा था। इसके दो संस्करण हैंकृ आर्च ज्योतिष (ऋग्वेद से सम्बद्ध) जिसमें 36 श्लोक हैं तथा याजुए ज्योतिष (यजुर्वेद से सम्बद्ध), जिसमें 43 श्लोक हैं।

छन्द– यह पद्यबद्ध वेदमन्त्रों के सही–सही उच्चारण के लिए उपयोगी वेदाङ्ग है। इससे वैदिक मन्त्रों के चरणों का ज्ञान होता है। इसका ज्ञान वैदिक मन्त्रों के उच्चारण के लिए आवश्यक है। इससे छन्दरू शास्त्र का महत्त्व सिद्ध होता है। वेदों में सात मुख्य छन्द प्रयुक्त हैंकृ गायत्री (आठ अक्षरों के तीन चरण), अनुष्टुप् (आठ अक्षरों के चार चरण), त्रिष्टुप् (11 अक्षरों के

चार चरण) बृहती, जगती, पङ्क्ति, उष्णिक। छन्दरू शास्त्र जानने से वैदिक मन्त्रों के चरणों की व्यवस्था समझी जा सकती है तथा मन्त्र–पाठ के समय उचित विराम हो सकता है। वेदों और वेदाङ्गों के सम्यक् ज्ञान के लिए कालान्तर में कुछ परिशिष्ट ग्रन्थ भी लिखे गए। इनग्रन्थों को अनुक्रमणीकहते हैं। इनमें देवता, ऋषि, छन्द, सूक्त इत्यादि की गणना हुई है। सभी वेदों की पृथक्–पृथक् अनुक्रमणियाँ हैं। ऋग्वेद की अनुक्रमणियाँ शौनक ने लिखीं। ऋग्वेद के देवताओं की अनुक्रमणी के रूप में छन्दोबद्ध ग्रन्थ बृहद्देवता उपलब्ध है। यह बहुत महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसमें आठ अध्याय तथा 1204 श्लोक हैं। इसी प्रकार, ऋक्सर्वानुक्रमणी, छन्दोऽनुक्रमणी, आर्षानुक्रमणी आदि परिशिष्ट ग्रन्थ हैं। यजुर्वेद के परिशिष्ट कात्यायन ने रचे। अथर्ववेद के परिशिष्टों में सर्वानुक्रमणी महत्त्व रखती है। इसमें अथर्ववेद के प्रत्येक काण्ड के देवताओं, ऋषियों, सूक्तों और मन्त्रों का विवरण है। ये परिशिष्ट वेदों की रक्षा करने में महत्त्वपूर्ण योगदान करते रहे हैं। इन्हीं के कारण वेदों में एक अक्षर की भी न्यूनता और वृद्धि नहीं हो सकी है।

संस्कृत साहित्य के प्रथम चरण में विकसित वैदिक वाङ्गमय की व्याख्याएँ परवर्ती युग में बहुत दिनों तक होती रहीं। व्याख्याओं के संबंध में विभिन्न मत चलते रहे और विभिन्न भाषाओं में इनके अनुवाद भी होते रहे हैं। आधुनिक युग में इन वैदिक ग्रन्थों के अच्छे–अच्छे संस्करण व्याख्याओं और अनुवादों के साथ प्रकाशित हुए हैं।

निष्कर्ष

वेदों का वह भाग, जिसमें *वैदिक*यज्ञों के लिये वेद.मन्त्रों के विधानादि की विस्तृत व्याख्या की गयी है, 'ब्राह्मण' ग्रन्थ कहलाते हैं। 'ब्रह्म' अर्थात् यज्ञविषयक प्रतिपादक होने से इनको 'ब्राह्मण' कहा गया है। भारत के पश्चिमोत्तर भाग में स्थित सप्तसिन्धु प्रदेश के निवासियों की साहित्यिक अभिव्यक्ति मौखिक रूप से जिस भाषा में हुई उसे वैदिक संस्कृत कहते हैं। भारतीय परंपरा मन्त्र और ब्राह्मण दोनों को वेद कहती है (मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्), किन्तु, आधुनिक विचारक वेद से केवल संहिता–भाग का ही ग्रहण करते हैं। ब्राह्मण शब्द ब्रह्मन् से बना है, जिसका अर्थ हैकृ वेद (ब्रह्म) से सम्बद्ध। अतरू वेदों की शाखाओं की व्याख्या करने के लिए पृथक्–पृथक् ब्राह्मण ग्रन्थ लिखे गए।

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. बब्, लॉरेंस ए. 1975 दैवीय पदानुक्रमरू मध्य भारत में लोकप्रिय हिंदू धर्म। न्यूयार्क, कोलंबिया विश्वविद्यालय प्रेस।

2. फ्लड, गेविन 2003 द ब्लैकवेल कम्पेनियन टू हिंदुइज्म। ऑक्सफोर्डरू ब्लैकवेल पब्लिशिंग।

3. हार्डी, फ्राइडहेल्म 1983 विरह–भक्तिरू दक्षिण भारत में कृष्ण भक्ति का प्रारंभिक इतिहास। ऑक्सफोर्डरू ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

4. हिल्टेबीटेल, अल्फ 1988 द कल्ट ऑफ द्रौपदी। वॉल्यूम। 1रू पौराणिक कथाएँरू गिंगी से कुरुक्षेत्र तक । शिकागोरू शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस।

5. 1991 द कल्ट ऑफ द्रौपदी। वॉल्यूम। 2रू हिंदू अनुष्ठान और देवी पर। शिकागोरू शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस।

6. लुटगेंडॉर्फ, फिलिप 1997 ष्इमेजिनिंग अयोध्यारू यूटोपिया एंड इट्स शैडो इन ए हिंदू लैंडस्केप।ष् इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हिंदू स्टडीज 1, 1, 19–54।

7. मैरियट, मैककिम 1955 विलेज इंडियारू स्टडीज इन द लिटिल कम्युनिटी। शिकागोरू शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस।

8. 1965 भारत और पाकिस्तान के पांच क्षेत्रों में जाति रैंकिंग और सामुदायिक संरचना। पुणे, भारतरू डेक्कन कॉलेज स्नातकोत्तर और अनुसंधान संस्थान।

9. 1966 "यू.पी. में सामाजिक संरचना और परिवर्तन। गांव।ष मैसूर नरसिम्हाचर श्रीनिवास (सं.) में, भारत के गांव, 106–21। नई दिल्लीरू एशिया पब्लिशिंग हाउस।

10. मित्तल, सुशील, और जीन गुरु 2007 द हिंदू वर्ल्ड। न्यूयॉर्करू रूटलेज.

11. पंडिता, गरुड़वाहन 1953 श्री दिव्यसुरीचरित। मद्रासरू पी.बी. अन्ननगर आचार्य।

12. सरमा, दीपक 2008 हिंदू धर्मरू एक पाठक। ऑक्सफोर्डरू विली–ब्लैकवेल.

13. सैक्स, विलियम 2002 डांसिंग द सेल्फरू पर्सनहुड एंड परफॉर्मेंस इन द पांडव गढ़वाल के लीला। ऑक्सफोर्डरू ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

14. स्मिथ, ब्रायन के. 1994 ब्रह्मांड का वर्गीकरणरू प्राचीन भारतीय वर्ण प्रणाली और जाति की उत्पत्ति। ऑक्सफोर्डरू ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।